भारत-अमेरिका वैश्विक रणनीतिक साझेदारी: अवसर चुनौतियां और संभावनाएं

डॉ दुर्गेश कुमार त्रिपाठी
सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान)
राजकीय महाविद्यालय ढाढ़ बुजुर्ग, हाटा, कुशीनगर,उत्तर प्रदेश

सारांश

वर्तमान विश्व व्यवस्था में भारत तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के संबंध अंतरराष्ट्रीय राजनीति, वैश्विक अर्थव्यवस्था, सामरिक सहयोग, प्रौद्योगिकी विकास तथा सुरक्षा संरचना के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण बन चुके हैं। शीत युद्ध के समय दोनों देशों के संबंधों में कई उतार-चढ़ाव देखने को मिले। उस समय भारत ने गुटनिरपेक्ष नीति अपनाई थी, जबकि अमेरिका पश्चिमी गुट का प्रमुख राष्ट्र था। इस कारण दोनों देशों के बीच वैचारिक दूरी बनी रही। इसके अतिरिक्त भारत-सोवियत निकटता तथा अमेरिका-पाकिस्तान संबंधों ने भी दोनों देशों के परस्पर विश्वास को सीमित किया।

किन्तु समय के साथ वैश्विक राजनीति में आए परिवर्तनों, विशेषतः शीत युद्ध की समाप्ति, वैश्वीकरण, आर्थिक उदारीकरण और नई सामरिक आवश्यकताओं ने भारत-अमेरिका संबंधों को नई दिशा प्रदान की। 1991 के बाद भारत की आर्थिक नीति में आए परिवर्तन तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अमेरिका की बदलती रणनीतियों ने दोनों देशों को एक-दूसरे के निकट लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके बाद व्यापार, निवेश, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, ऊर्जा, रक्षा, शिक्षा, आतंकवाद-रोधी सहयोग, क्षेत्रीय सुरक्षा तथा सामुद्रिक व्यवस्था जैसे क्षेत्रों में दोनों देशों के संबंध निरंतर मजबूत होते गए।

आज भारत और अमेरिका के बीच संबंध केवल द्विपक्षीय हितों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे एशिया-प्रशांत क्षेत्र की स्थिरता, इंडो-पैसिफिक रणनीति, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन जैसे व्यापक अंतरराष्ट्रीय मुद्दों को भी प्रभावित करते हैं। फिर भी, व्यापारिक असंतुलन, वीज़ा नीतियाँ, रूस के साथ भारत के संबंध, चीन को लेकर रणनीतिक दृष्टिकोण, मानवाधिकार और वैश्विक कूटनीतिक प्राथमिकताओं में भिन्नता जैसी कुछ चुनौतियाँ इस साझेदारी के सामने मौजूद हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में भारत-अमेरिका संबंधों के ऐतिहासिक विकास, समकालीन स्वरूप, प्रमुख आयामों, चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द

रणनीतिक स्वायत्तता, संरचनावाद,सप्लाई चैन, टैरिफ, राजनीतिक साझेदारी, शीत युद्ध, गुटनिरपेक्षता, वैश्वीकरण, सामरिक सहयोग, तकनीकी सहयोग, इंडो-पैसिफिक, कूटनीति

1. परिचय

विश्व राजनीति में भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका दो ऐसे महत्वपूर्ण राष्ट्र हैं, जिनकी भूमिका केवल अपने-अपने राष्ट्रीय हितों तक सीमित नहीं है, बल्कि वे वैश्विक शक्ति-संतुलन, अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास और लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण में भी केंद्रीय स्थान रखते हैं। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, जबकि अमेरिका विश्व की सबसे शक्तिशाली लोकतांत्रिक महाशक्ति के रूप में जाना जाता है। इस दृष्टि से दोनों देशों के बीच संबंधों का अध्ययन अंतरराष्ट्रीय संबंधों की समझ के लिए अत्यंत आवश्यक है।

भारत और अमेरिका के संबंध ऐतिहासिक रूप से सरल और एकरेखीय नहीं रहे हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई, जबकि अमेरिका शीत युद्ध के दौरान सोवियत संघ के विरुद्ध पश्चिमी गुट का नेतृत्व कर रहा था। इस भिन्न वैचारिक पृष्ठभूमि ने दोनों देशों के संबंधों को प्रारंभिक दशकों में सीमित रखा। भारत का झुकाव कई अवसरों पर सोवियत संघ की ओर दिखाई दिया, जबकि अमेरिका ने दक्षिण एशिया में पाकिस्तान को अपना सामरिक सहयोगी बनाया। इससे दोनों देशों के बीच अविश्वास तथा दूरी बनी रही।

फिर भी, समय के साथ अंतरराष्ट्रीय राजनीति में जो परिवर्तन आए, उन्होंने भारत-अमेरिका संबंधों को पुनर्परिभाषित किया। विशेष रूप से 1991 के बाद भारत की आर्थिक उदारीकरण नीति तथा शीत युद्ध की समाप्ति ने दोनों देशों के बीच सहयोग के नए मार्ग खोले। अब दोनों देशों के बीच संबंध केवल औपचारिक कूटनीतिक संपर्क तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे बहुआयामी और रणनीतिक स्वरूप ग्रहण कर चुके हैं। व्यापार, रक्षा, ऊर्जा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, शिक्षा, अंतरिक्ष, स्वास्थ्य, समुद्री सुरक्षा और आतंकवाद-रोधी प्रयासों में सहयोग ने इस रिश्ते को नई मजबूती प्रदान की है।

वर्तमान समय में भारत-अमेरिका संबंध एशिया-प्रशांत क्षेत्र की राजनीति, चीन के बढ़ते प्रभाव, वैश्विक आर्थिक पुनर्संरचना, तकनीकी प्रभुत्व और लोकतांत्रिक सहयोग के संदर्भ में विशेष महत्व रखते हैं। दोनों देश एक-दूसरे के लिए अवसर भी हैं और कूटनीतिक संतुलन की कसौटी भी। इसलिए भारत-अमेरिका संबंधों का अध्ययन न केवल अतीत की घटनाओं को समझने के लिए, बल्कि भविष्य की अंतरराष्ट्रीय राजनीति का आकलन करने के लिए भी अत्यंत उपयोगी है।

2. भारत-अमेरिका संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत और अमेरिका के संबंधों की नींव स्वतंत्रता के बाद ही रखी गई थी, किंतु शुरुआती दशकों में यह संबंध बहुत अधिक प्रगाढ़ नहीं हो सके। इसका प्रमुख कारण दोनों देशों की विदेश नीति की प्रकृति और प्राथमिकताओं में अंतर था। भारत ने पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में गुटनिरपेक्ष आंदोलन की दिशा में अपना मार्ग चुना। भारत का उद्देश्य किसी भी सैन्य गुट का हिस्सा बने बिना स्वतंत्र विदेश नीति अपनाना था। दूसरी ओर अमेरिका शीत युद्ध के दौरान वैश्विक स्तर पर साम्यवाद को रोकने और अपने प्रभाव को बनाए रखने के लिए सक्रिय था।

1962 के भारत-चीन युद्ध ने भारत की सुरक्षा चिंताओं को बढ़ा दिया। उस समय अमेरिका ने भारत को कुछ सहायता दी, लेकिन दीर्घकालिक दृष्टि से यह सहयोग स्थायी विश्वास में परिवर्तित नहीं हो सका। 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान अमेरिका का झुकाव पाकिस्तान की ओर देखा गया, जिससे भारत-अमेरिका संबंधों में और अधिक तनाव उत्पन्न हुआ। भारत ने उसी समय सोवियत संघ के साथ मैत्री संधि की, जिसने अमेरिका की आशंकाओं को और बढ़ाया।

1974 में भारत के परमाणु परीक्षण ने भी अमेरिका को असहज किया। इसके बाद भारत के प्रति अमेरिकी दृष्टिकोण में सावधानी और दबाव दोनों दिखाई दिए। 1998 में भारत के परमाणु परीक्षणों के बाद अमेरिका ने प्रतिबंध लगाए, परंतु कुछ समय बाद यह स्पष्ट हुआ कि भारत को अलग-थलग रखना संभव नहीं है। धीरे-धीरे दोनों देशों ने अपने मतभेदों को व्यावहारिक दृष्टि से समझना शुरू किया। यही वह चरण था जहाँ से दोनों देशों के बीच नई राजनीतिक समझ और रणनीतिक साझेदारी की संभावनाएँ उभरने लगीं।

इस प्रकार भारत-अमेरिका संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि यह दिखाती है कि यह रिश्ता प्रारंभ में संदेह, दूरी और सीमित सहयोग का था, किंतु वैश्विक परिस्थितियों और राष्ट्रीय हितों के बदलने के साथ यह संबंध एक नए युग में प्रवेश कर गया।

3. शीत युद्ध काल में भारत-अमेरिका संबंध

शीत युद्ध काल (लगभग 1947 से 1990 तक) भारत-अमेरिका संबंधों के लिए मिश्रित अनुभवों का समय था। एक ओर दोनों देश लोकतांत्रिक व्यवस्था में विश्वास रखते थे, तो दूसरी ओर उनकी विदेश नीति और सामरिक प्राथमिकताएँ अलग-अलग थीं। भारत उपनिवेशवाद-विरोध, शांति, पंचशील और गुटनिरपेक्षता को महत्व देता था, जबकि अमेरिका सोवियत प्रभाव को रोकने के लिए सैन्य गठबंधनों और सामरिक सहयोगों का सहारा ले रहा था।

भारत ने गुटनिरपेक्ष नीति अपनाकर यह स्पष्ट कर दिया था कि वह किसी एक महाशक्ति के प्रभाव में नहीं रहेगा। अमेरिका को यह नीति कई बार अस्पष्ट और व्यावहारिक रूप से सोवियत-पक्षीय प्रतीत होती थी। वहीं भारत को लगता था कि अमेरिका दक्षिण एशिया में पाकिस्तान को अनावश्यक महत्व दे रहा है। अमेरिका ने पाकिस्तान को सैन्य सहायता दी, जिससे भारत की सुरक्षा चिंताएँ और गहरी हुईं।

1962 के भारत-चीन युद्ध के समय अमेरिका ने भारत की कुछ सहायता अवश्य की, लेकिन यह सहयोग दीर्घकालिक रणनीतिक साझेदारी में परिवर्तित नहीं हुआ। 1971 के बांग्लादेश मुक्ति संग्राम और भारत-पाक युद्ध के दौरान अमेरिका की नीतियाँ भारत के लिए अस्वीकार्य रहीं। अमेरिका का सातवाँ बेड़ा हिंद महासागर की ओर बढ़ाया जाना भारत में अविश्वास के रूप में देखा गया।

इस काल में भारत और अमेरिका के बीच राजनीतिक दूरी के बावजूद सीमित संवाद, खाद्य सहायता, शैक्षिक संपर्क और कुछ आर्थिक सहयोग जारी रहे। फिर भी यह स्पष्ट था कि दोनों देशों के संबंध विश्वास और सामरिक सहयोग के स्तर तक नहीं पहुँच पाए थे। शीत युद्ध काल ने यह सिद्ध किया कि केवल लोकतांत्रिक समानता पर्याप्त नहीं होती; संबंधों की दिशा भू-राजनीतिक हितों, सुरक्षा चिंताओं और अंतरराष्ट्रीय शक्ति-संतुलन से भी निर्धारित होती है।

4. शीत युद्धोत्तर काल में संबंधों का परिवर्तन

1991 में सोवियत संघ के विघटन के साथ शीत युद्ध समाप्त हुआ और विश्व राजनीति में एक नए युग की शुरुआत हुई। यह परिवर्तन भारत-अमेरिका संबंधों के लिए भी निर्णायक सिद्ध हुआ। भारत ने आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीतियाँ अपनाईं। इससे भारत की अर्थव्यवस्था खुली, विदेशी निवेश बढ़ा और अमेरिका सहित पश्चिमी देशों के लिए भारत एक उभरता हुआ आर्थिक भागीदार बन गया।

शीत युद्ध की समाप्ति के बाद अमेरिका को एशिया में नए साझेदारों की आवश्यकता थी। भारत एक बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र, विशाल बाजार, कुशल मानव संसाधन और महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक स्थिति वाला देश था। अमेरिका ने यह समझना शुरू किया कि भारत को केवल दक्षिण एशिया के संदर्भ में नहीं, बल्कि एशियाई और वैश्विक शक्ति-संतुलन के संदर्भ में देखना चाहिए।

यद्यपि 1998 के परमाणु परीक्षणों के बाद दोनों देशों के बीच तनाव उत्पन्न हुआ और अमेरिका ने भारत पर प्रतिबंध लगाए, लेकिन शीघ्र ही दोनों पक्षों ने संवाद का मार्ग अपनाया। भारत की सुरक्षा आवश्यकताओं और उसकी स्वायत्त विदेश नीति को अमेरिका ने धीरे-धीरे अधिक यथार्थवादी दृष्टि से समझना शुरू किया।

1990 के दशक के उत्तरार्ध और 2000 के दशक की शुरुआत में दोनों देशों के बीच संबंधों में उल्लेखनीय सुधार हुआ। उच्च स्तरीय यात्राएँ, आर्थिक सहयोग, आईटी क्षेत्र में संपर्क, भारतीय प्रवासी समुदाय की भूमिका तथा आतंकवाद-रोधी सहयोग ने इस रिश्ते को नए स्तर तक पहुँचाया। यह वही चरण था जिसने आगे चलकर भारत-अमेरिका रणनीतिक साझेदारी की ठोस नींव रखी।

5. 21वीं सदी में भारत-अमेरिका रणनीतिक साझेदारी का विस्तार

21वीं सदी में भारत-अमेरिका संबंधों ने अभूतपूर्व गति प्राप्त की है। यह संबंध अब केवल कूटनीतिक संवाद का

विषय नहीं रह गया, बल्कि बहुआयामी रणनीतिक साझेदारी के रूप में सामने आया है।

1. असैन्य परमाणु समझौता

2005 का भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौता दोनों देशों के संबंधों में मील का पत्थर साबित हुआ। इस समझौते ने भारत को वैश्विक परमाणु ढाँचे में एक विशेष स्थान दिया। अमेरिका ने भारत की परमाणु आवश्यकताओं को मान्यता दी और ऊर्जा सुरक्षा के क्षेत्र में सहयोग का मार्ग प्रशस्त किया। यह समझौता दोनों देशों के बीच विश्वास और रणनीतिक निकटता का प्रतीक था।

2. रक्षा समझौते और सैन्य सहयोग

भारत और अमेरिका ने रक्षा क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की है।

- **LEMOA (2016)**
- **COMCASA (2018)**
- **BECA (2020)**

इन समझौतों ने लॉजिस्टिक सहयोग, सुरक्षित संचार, भू-स्थानिक सूचनाओं के आदान-प्रदान और सैन्य समन्वय को बढ़ाया। दोनों देश संयुक्त सैन्य अभ्यास भी करते हैं, जिनमें मालाबार अभ्यास विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

3. इंडो-पैसिफिक रणनीति

चीन के बढ़ते प्रभाव और समुद्री मार्गों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए भारत और अमेरिका दोनों इंडो-पैसिफिक क्षेत्र को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते हैं। अमेरिका भारत को इस क्षेत्र में एक प्रमुख संतुलनकारी शक्ति के रूप में देखता है।

4. क्वाड (QUAD) का महत्व

भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के बीच बना क्वाड समूह एशिया-प्रशांत क्षेत्र में रणनीतिक सहयोग का मंच है। इसका उद्देश्य क्षेत्रीय स्थिरता, समुद्री सुरक्षा, लोकतांत्रिक सहयोग और आपदा प्रबंधन को मजबूत करना है।

इस प्रकार 21वीं सदी में भारत-अमेरिका संबंधों ने स्पष्ट रूप से रणनीतिक साझेदारी का स्वरूप ग्रहण कर लिया है।

6. भारत-अमेरिका संबंधों के प्रमुख आयाम

1. राजनीतिक आयाम

दोनों देशों के बीच उच्च स्तरीय राजनीतिक संवाद निरंतर बढ़ा है। प्रधानमंत्रियों और राष्ट्रपतियों की परस्पर यात्राएँ, शिखर वार्ताएँ और बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग इस राजनीतिक निकटता को दर्शाते हैं। दोनों देश लोकतंत्र, विधि का शासन और बहुलवाद जैसे मूल्यों को महत्व देते हैं।

2. आर्थिक आयाम

भारत और अमेरिका के बीच व्यापार में लगातार वृद्धि हो रही है। अमेरिका भारत का एक प्रमुख व्यापारिक भागीदार है। सूचना प्रौद्योगिकी, सेवाएँ, दवाएँ, विनिर्माण, कृषि, ऊर्जा और डिजिटल अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में व्यापक सहयोग देखने को मिलता है। अमेरिकी निवेश भारत के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जबकि भारतीय कंपनियाँ भी अमेरिका में निवेश और रोजगार-सृजन में योगदान देती हैं।

3. रक्षा एवं सुरक्षा आयाम

रक्षा क्षेत्र में संबंध विशेष रूप से मजबूत हुए हैं। अमेरिका भारत को रक्षा उपकरण, उन्नत तकनीक और सामरिक सहयोग प्रदान करता है। आतंकवाद-रोधी सहयोग, समुद्री सुरक्षा, साइबर सुरक्षा और खुफिया साझेदारी ने दोनों देशों के बीच सुरक्षा विश्वास को सुदृढ़ किया है।

4. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

ISRO और NASA के बीच सहयोग, डिजिटल तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, क्वांटम कंप्यूटिंग, 5G, साइबर सुरक्षा और अंतरिक्ष अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच सहयोग का विस्तार हो रहा है।

5. शिक्षा और मानव संसाधन

भारतीय छात्र बड़ी संख्या में अमेरिका में उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं। यह शैक्षिक संबंध ज्ञान, नवाचार और सांस्कृतिक समझ को बढ़ाता है। भारतीय मूल का प्रवासी समुदाय भी दोनों देशों के बीच पुल का कार्य करता है।

6. ऊर्जा और जलवायु सहयोग

ऊर्जा सुरक्षा, स्वच्छ ऊर्जा, जलवायु परिवर्तन और सतत विकास के क्षेत्र में भारत और अमेरिका का सहयोग महत्वपूर्ण होता जा रहा है।

7. भारत-अमेरिका संबंधों की चुनौतियाँ

1. व्यापारिक असंतुलन

दोनों देशों के बीच व्यापार बढ़ने के बावजूद व्यापारिक मतभेद भी मौजूद हैं। शुल्क, बाजार पहुँच, कृषि नीति, बौद्धिक संपदा अधिकार और डिजिटल व्यापार से जुड़े प्रश्न समय-समय पर विवाद का कारण बनते हैं।

2. वीज़ा और H-1B नीति

भारतीय पेशेवरों के लिए H-1B वीज़ा अत्यंत महत्वपूर्ण है। अमेरिका की बदलती वीज़ा नीतियाँ भारत की आईटी और सेवा क्षेत्र की कंपनियों को प्रभावित करती हैं। यह एक संवेदनशील द्विपक्षीय मुद्दा है।

3. रूस के साथ भारत के संबंध

भारत की विदेश नीति रणनीतिक स्वायत्तता पर आधारित है। रूस के साथ भारत के लंबे समय से चले आ रहे रक्षा और ऊर्जा संबंध अमेरिका को कई बार असहज करते हैं। विशेषतः रूस-यूक्रेन युद्ध के संदर्भ में यह मतभेद अधिक स्पष्ट हुआ।

4. चीन को लेकर दृष्टिकोण

भारत और अमेरिका दोनों चीन के बढ़ते प्रभाव को चुनौती के रूप में देखते हैं, लेकिन दोनों की रणनीति और प्राथमिकताएँ समान नहीं हैं। भारत अपनी क्षेत्रीय सुरक्षा और सीमाई चुनौतियों को ध्यान में रखता है, जबकि अमेरिका व्यापक वैश्विक शक्ति-संतुलन के संदर्भ में चीन को देखता है।

5. मानवाधिकार और लोकतांत्रिक विमर्श

कभी-कभी मानवाधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक मूल्यों से जुड़े मुद्दों पर अमेरिकी टिप्पणियाँ भारत को हस्तक्षेप जैसी प्रतीत होती हैं। इससे कूटनीतिक असहजता पैदा हो सकती है।

6. रणनीतिक निर्भरता का प्रश्न

भारत अपनी विदेश नीति में आत्मनिर्भरता और स्वतंत्र निर्णय क्षमता बनाए रखना चाहता है। इसलिए वह अमेरिका के साथ निकट संबंध रखते हुए भी पूर्ण निर्भरता से बचना चाहता है। यह संतुलन भारत की रणनीतिक नीति का महत्वपूर्ण भाग है।

8. भारत-अमेरिका संबंधों की संभावनाएँ

भारत और अमेरिका के बीच भविष्य में संबंधों के और अधिक मजबूत होने की प्रबल संभावना है। इसके कई कारण हैं।

1. साझा लोकतांत्रिक मूल्य

दोनों देश लोकतंत्र, कानून के शासन और नागरिक स्वतंत्रता जैसे मूल्यों में विश्वास रखते हैं। यह मूल्य-आधारित निकटता भविष्य के सहयोग को मजबूती देती है।

2. आर्थिक अवसर

भारत एक विशाल बाजार, युवा जनसंख्या और तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था वाला देश है। अमेरिका के लिए भारत निवेश, व्यापार और तकनीकी विस्तार का बड़ा अवसर प्रदान करता है।

3. तकनीकी सहयोग

AI, 5G, सेमीकंडक्टर, साइबर सुरक्षा, अंतरिक्ष तकनीक, जैव-प्रौद्योगिकी और डिजिटल अवसंरचना जैसे क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच सहयोग भविष्य में अत्यंत व्यापक हो सकता है।

4. इंडो-पैसिफिक और सामुद्रिक सुरक्षा

इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में संतुलन, समुद्री मार्गों की सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता के लिए भारत-अमेरिका सहयोग और अधिक महत्वपूर्ण होता जाएगा।

5. वैश्विक मंचों पर साझेदारी

जलवायु परिवर्तन, महामारी प्रबंधन, आतंकवाद, आपूर्ति श्रृंखला सुरक्षा और ऊर्जा संकट जैसे वैश्विक मुद्दों पर दोनों देशों की साझेदारी विश्व राजनीति को प्रभावित कर सकती है।

6. शिक्षा, शोध और नवाचार

शोध, नवाचार, विश्वविद्यालयीय संपर्क, स्टार्टअप पारिस्थितिकी और वैज्ञानिक सहयोग भविष्य के रिश्तों को और अधिक गहराई देंगे।

9. समकालीन परिप्रेक्ष्य में भारत-अमेरिका संबंध

वर्तमान समय में भारत-अमेरिका संबंधों का महत्व केवल द्विपक्षीय लाभ तक सीमित नहीं है। यह संबंध व्यापक अंतरराष्ट्रीय संरचना को प्रभावित करता है। अमेरिका भारत को एक विश्वसनीय साझेदार, उभरती शक्ति और एशियाई संतुलनकारी राष्ट्र के रूप में देखता है। वहीं भारत अमेरिका को एक ऐसी महाशक्ति के रूप में देखता है, जिसके

साथ सहयोग से वह तकनीकी प्रगति, सुरक्षा मजबूती, आर्थिक विकास और वैश्विक प्रभाव में वृद्धि प्राप्त कर सकता है।

हाल के वर्षों में दोनों देशों ने रक्षा, तकनीक, व्यापार, ऊर्जा, साइबर सुरक्षा और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। साथ ही, दोनों देशों के नेतृत्व ने यह स्पष्ट किया है कि उनकी साझेदारी 21वीं सदी की प्रमुख रणनीतिक साझेदारियों में से एक है। फिर भी, भारत अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखते हुए संतुलित और बहुआयामी विदेश नीति अपनाना चाहता है। यही कारण है कि वह अमेरिका के साथ निकटता रखते हुए भी अन्य शक्तियों के साथ संबंध बनाए रखता है।

समकालीन संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि भारत-अमेरिका संबंध अब "हित-आधारित सहयोग" से आगे बढ़कर "विश्व व्यवस्था को प्रभावित करने वाली साझेदारी" का रूप ले चुके हैं।

10. निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच राजनीतिक संबंध समय के साथ निरंतर विकसित हुए हैं और आज वे एक मजबूत रणनीतिक साझेदारी के रूप में स्थापित हो चुके हैं। शीत युद्ध के दौरान वैचारिक दूरी, गुटनिरपेक्षता, अमेरिका-पाकिस्तान निकटता तथा परमाणु प्रश्न जैसे कारणों से दोनों देशों के संबंधों में अपेक्षित निकटता नहीं बन सकी थी। किंतु शीत युद्ध की समाप्ति, भारत में आर्थिक उदारीकरण, वैश्विक शक्ति-संतुलन में परिवर्तन तथा सामरिक आवश्यकताओं ने इस रिश्ते को नई दिशा प्रदान की।

आज दोनों देशों के बीच व्यापार, निवेश, रक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, ऊर्जा, शिक्षा और सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में बहुआयामी सहयोग विकसित हो चुका है। असैन्य परमाणु समझौता, रक्षा समझौते, इंडो-पैसिफिक दृष्टि, क्वाड में भागीदारी और तकनीकी सहयोग इस साझेदारी की गहराई को प्रमाणित करते हैं। साथ ही, यह भी सत्य है कि व्यापारिक असंतुलन, वीज़ा नीति, रूस के साथ भारत के संबंध तथा कुछ कूटनीतिक मतभेद भविष्य की चुनौतियाँ बने हुए हैं।

फिर भी, समग्र दृष्टि से देखा जाए तो भारत-अमेरिका संबंधों की दिशा सकारात्मक, प्रगतिशील और संभावनापूर्ण है। यह साझेदारी केवल द्विपक्षीय हितों तक सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक शांति, सुरक्षा, आर्थिक विकास और तकनीकी प्रगति के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि दोनों देश परस्पर सम्मान, समानता, रणनीतिक संवेदनशीलता और व्यावहारिक सहयोग की भावना बनाए रखते हैं, तो यह संबंध 21वीं सदी की सबसे प्रभावशाली साझेदारियों में से एक सिद्ध हो सकता है।

संदर्भ

1. बदलती दुनिया में भारत की विदेश नीति :वी पी दत्त
2. भारतीय विदेश नीति विश्व और उसके आधार :डॉ एस सी पाण्डेय
3. भारतीय विदेश नीति की बुनियादी अवधारणाएं : बी. एफ. सी. पब्लिकेशन:2024
4. डॉ. शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी, *भारत की विदेश नीति*।
5. BBC हिंदी, भारत-अमेरिका संबंधों पर विशेष विश्लेषण।
6. अशांत विश्व में भारत की सुरक्षा :जसजीत सिंह
7. South Asia Journal.
8. *परिवर्तनशील विश्व में भारत की रणनीति : सुब्रमण्यम जयशंकर*
9. भारत टाइम्स, 16 अप्रैल 2025.
10. Harsh V. Pant, *Indian Foreign Policy*.
11. Rusen kumar, *Indo-US Relation*.